आओ—मन की बातें करें

कमला भसीन

एक बात बताओ—

कुएं से पानी कौन लाता है?—लड़की।

खाना पकाने में मां की मदद कौन करता है?—लड़की।

छोटे भाई-बहनों की देखरेख कौन करता है?—लड़की।

चारा कौन बीनता है?—लड़की।

और...

किसके पैदा होने पर ज़्यादा खुशी होती है?—लड़के के।

खाना किसे पहले मिलता है? लड़के को।

खेलना और घूमना किसे ज़्यादा मिलता है? लड़के को।

स्कूल किसे ज़्यादा भेजा जाता है? लड़के को।

है न हिसाब में गड़बड़। लड़कियों के हिस्से में ज़्यादा काम, कम आराम। और लड़कियों को अधिकार और आज़ादी भी कम।

आज भी हमारे देश में पुरूष और लड़के ज़्यादा पढ़े-लिखे हैं। कई गांवों में तो सौ में से दस ही औरतें पढ़ी-लिखी हैं।

औरतें कम पढ़ी लिखी हैं। तो और बातों में भी पीछे रह जाती हैं। लड़कों और मर्दों को ज़्यादा आज़ादी होती है। उन्हे ज़्यादा मौक़ा मिलता है। उनकी बेहतर पढ़ाई-लिखाई होती है तो उन्हें आगे बढ़ने का मौका ज़्यादा मिलता है। औरतें मज़दूर रह जाती हैं। मर्द मेट बन जाते हैं। औरतें कुली का काम करती हैं और मर्द बेलदार या कारीगर बनते हैं। औरतों को दाम भी कम, मर्दों के दाम भी ज़्यादा।

फिर पंच भी मर्द, सरपंच भी मर्द। बी.डी.ओ मर्द, कलैक्टर मर्द। मर्द डाक्टर तो औरत नर्स। कानून बनाने वाले मर्द, कानून लागू करने वाले मर्द। पंडित भी मर्द, मौलवी भी मर्द, पादरी भी मर्द। यानी धर्म क्या है, अच्छा-बुरा क्या है यह सब मर्द बताते हैं।

पहले कहते थे जिसकी लाठी उसकी भैंस। अब एक और बात भी सच है—

जिसके पास ज्ञान
उसका ही मान
उसकी ही शान।

इसका मतलब है कि अगर हम औरतों को आगे आना है तो हमें अपना ज्ञान बढ़ाना पड़ेगा। पढ़ना-लिखना पड़ेगा। इसके साथ-साथ अपने हक़ों की मांग करनी पड़ेगी। चुप रह कर सहने से काम नहीं चलेगा। अगर बेटियां ख़ामोश रह कर काम ही काम करती रहेंगी तो घरवाले समझेंगे "ये तो खुश हैं। कुछ बदलने की जरूरत नहीं है।"

बदलाव तब ही तो आएगा जब हम बोलेंगे और कहेंगे "हमें भी पढ़ना है। हमें भी आगे बढ़ना है।"

"हमें भी काम चाहिए और काम का पूरा दाम चाहिए"।

"हमें भी आराम चाहिए, पैर फैलाने को धाम चाहिए"।

हमने "सबला" इसलिये शुरू की कि हम

बहनों के साथ बात कर सकें। एक दूसरे के दिल की बात कह-सुन सकें। एक दूसरे का ज्ञान बढ़ा सकें, नई जानकारी ले-दे सकें। कहने सुनने से, पढ़ने-लिखने से दिल और दिमाग के जाले हटते हैं। दिमाग का अंधेरा कम होता है। सोचने और चर्चा करने से हालात समझ में आते हैं। आगे का रास्ता नज़र आता है।

कुछ लोग कहते हैं पढ़ने लिखने से लड़कियां बिगड़ जाती हैं। बताओ सच है यह बात? सोचने समझने से कोई बिगड़ता है? ऐसी झूठ-झूठ बातें कह कर लड़कियों को आगे नहीं बढ़ने देते। हमें बोल कर इस झूठ को भी ख़त्म करना है।

इसलिए अब चलो, ख़ामोशी तोड़ अपने दिल की बातें करें। अपने हक़ की बातें करें। मिलजुल कर पढ़े-लिखें, अपना ज्ञान बढ़ाए और अपना मान बढ़ाएं। □